॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

९७

श्रीमदानन्दवर्धनाचार्यविरचितः

ध्वन्यालोकः

श्रीमदभिनवगुप्तपादविरचित-'लोचन'-सहितः

सटिप्पण 'प्रकाश'-हिन्दीव्याख्योपेतश्च

हिन्दी व्याख्याकार—

आचार्य जगन्नाथ पाठक एम० ए०

(साहित्यशास्त्राचार्य, साहित्यरत्न)

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी २२१००१

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
97

DHVANYALOKA

OF

SRI ANANDAVARDHANACHARYA

with

THE LOCHANA SANSKRIT COMMENTARY

OF

Sri Abhinavagupta

and

THE PRAKASA HINDI TRANSLATION
OF BOTH THE TEXTS

&

EXHAUSTIVE NOTES

By

Acharya Jagannath Pathak

M. A.

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

विषय-सूची

(ध्वन्यालोक-लोचन)

प्रथम उद्योत

	पृष्ठ
(क) लोचन का मङ्गलाचरण	१
(ख) लोचनकार द्वारा स्वपरिचय	२
(ग) ध्वन्यालोक का मंगलाचरण तथा उस पर विस्तृत व्याख्यान	३
१. ध्वनिविषयक तीन विप्रतिपत्तियां और ग्रन्थ का प्रयोजन	८
तीन प्रधान विप्रतिपत्तियों का संक्षिप्त निर्देश	१४
अभावविकल्प के तीनों प्रकारों का संक्षिप्त निर्देश	१५
अभाववादियों का प्रथम विकल्प	१७
शब्द-अर्थ के चारुत्व के दो भेद	१८
वृत्तियों का स्वरूप-विचार	१९
अभाववादियों का द्वितीय विकल्प	२३
अभाववादियों का तृतीय विकल्प	२६
अभाववादियों के मत का उपसंहार	२७
मनोरथकवि का ध्वनिविरोधी श्लोक	२९
भाक्तवादियों का विकल्प	२९
'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति और सङ्गति	३०
लो० में 'गुणवृत्ति' का अर्थ	३३
अलक्षणीयतावादियों का मत	३५
ध्वनि-स्वरूप के प्रकाशन का उद्देश्य	३६
लो० में विभिन्न सम्बन्धों का निर्देश	३७
'सहृदय' का स्वरूप	३९
काव्य में ध्वनि के अंशत्ववादी भट्टनायक के मत का खण्डन	४०
काव्य के मुख्य प्रयोजन के रूप में प्रीति या आनन्द का निर्देश	४१
२. ध्वनि-सिद्धान्त की भूमिका	४३
काव्यात्मभूत अर्थ के भेद : वाच्य और प्रतीयमान	४३
'सहृदयश्लाघ्य' विशेषण के तात्पर्य का प्रतिपादन	४४
३. वाच्य अर्थ के प्रतिपादन का अभाव	४६
४. प्रतीयमान का वाच्य से भिन्नत्व	४७
'महाकवि' व्यपदेश का कारण	४८
'लावण्य' पर विचार	४९
प्रतीयमान के भेद	५०

पृष्ठ

ध्वनि के तीन रूप : वस्तु, अलङ्कार और रस ५१
वाच्य से वस्तुव्यङ्ग्य का भेद ५१
विधिरूप वाच्य में प्रतिषेधरूप व्यङ्ग्य का उदाहरण ५१
'भ्रम धार्मिक०' इस गाथा का व्याख्यान ५३
अभिहितान्वयवादी के अनुसार शङ्का तथा उसका खण्डन ५४
अन्विताभिधानवादी के अनुसार शङ्का तथा उसका खण्डन ६२
'भ्रम धार्मिक०' पर भट्टनायक के विचार तथा उसका खण्डन ६७
प्रतिषेधरूप वाच्य में विधिरूप व्यङ्ग्य का उदाहरण और व्याख्यान ७१
इस पर भट्टनायक के विचार का खण्डन ७२
विधिरूप वाच्य में अनुभयरूप व्यङ्ग्य का उदाहरण और व्याख्यान ७३
प्रतिषेधरूप वाच्य में अनुभयरूप व्यङ्ग्य का उदाहरण और व्याख्यान ७४
विषय-भेद से भी व्यङ्ग्य का वाच्य से भेद-प्रतिपादन एवं उदाहरण ७६
रसादि का वाच्यसामर्थ्य से आक्षिप्तत्व-प्रतिपादन ८१

५. इतिहास के व्याज से रस के काव्यात्मत्व का प्रसाधन ८६

६. प्रतीयमान रस का सहृदयानुभवसिद्धत्व-प्रतिपादन ९२

७. प्रतीयमान अर्थ की प्रतीति काव्यार्थतत्त्वज्ञों को ही ९४

८. व्यङ्ग्य का प्राधान्य-प्रतिपादन ९७

९. वाच्य और वाचक के प्रथम उपादान का युक्तिपूर्वक उपपादन ९८

१०. व्यङ्ग्य अर्थ के वाच्यार्थप्रतीतिपूर्वकत्व का उपपादन ९९

११ १२. पहले वाच्यार्थ की प्रतीति के होने पर भी व्यङ्ग्यार्थ के प्राधान्य की अक्षुण्णता १०१

१३. ध्वनि-काव्य का लक्षण १०२

भट्टनायक के मत का दूषण १०३
चारुत्व-प्रतीति को काव्यात्मा स्वीकार करना १०४
अलंकारादि प्रकारों में ध्वनि के अन्तर्भाव का निषेध १०७
'उपसर्जनीकृतस्वार्थौ' का स्पष्टीकरण १०८
'समासोक्ति' में व्यङ्ग्यानुगत वाच्य के प्राधान्य का प्रतिपादन १०९
'आक्षेप' में वाच्य के प्राधान्य का प्रतिपादन १११
चारुत्व का उत्कर्ष ही वाच्य और व्यङ्ग्य के प्राधान्य का आधार ११४
'अनुक्तनिमित्ता विशेषोक्ति' में वाच्य के प्राधान्य का प्रतिपादन ११७
'पर्यायोक्त' में ध्वनि के अन्तर्भाव का निराकरण ११८
'अपह्नुति' और 'दीपक' में वाच्य के प्राधान्य का निर्देश १२१
सङ्करालङ्कार में भी व्यङ्ग्य के प्राधान्य की अविवक्षा का निर्देश १२२
'अप्रस्तुतप्रशंसा' में भी व्यङ्ग्य के प्राधान्य की अविवक्षा का निर्देश १२३
पूर्वोक्त विषयों का संक्षेप से प्रतिपादन १३५
प्रकारान्तर से अलङ्कार और ध्वनि के तादात्म्य का निराकरण १३६
'सूरिभिः कथित' इस कारिका भाग का व्याख्यान १३७
वैयाकरणों के अनुसार ध्वनि १३८

पृष्ठ

अभाववादियों के प्रति उत्तर का उपसंहार १४२
ध्वनि के दो भेद १४३
अविवक्षितवाच्य ध्वनि का उदाहरण १४५
विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि का उदाहरण १४६
भाक्तवादी के मत के दूषण का उपक्रम १४८

१४. भक्ति और ध्वनि के एकत्व का निषेध १४९
कवियों द्वारा उपचरित शब्दवृत्ति से व्यवहार के उदाहरण १५१
१५. उक्त्यन्तर से अशक्य चारुत्व का व्यञ्जक शब्द 'ध्वनि' है १५५
१६. रूढ़ शब्द भी ध्वनि के विषय नहीं होते १५६
१७. गुण-वृत्ति से बोध्य अर्थ में शब्द स्खलद्गति नहीं है १५७
१८. लक्षणा-व्यापार और ध्वनन-व्यापार का भिन्न-विषयकत्व १५९
भक्ति के ध्वनि का लक्षण होने पर अव्याप्ति का निर्देश १५९
गौण और लाक्षणिक के भेद का प्रतिपादन १५९
लक्षणा के भेद १६०
रत्यादि-प्रतीति का शाब्दत्व न स्वीकारने वाले मीमांसक का मत एवं उसका दूषण १६१
रस-प्रतीति के अलौकिकत्व का उपपादन १६४
१९. भक्ति को किसी ध्वनि-भेद का उपलक्षण मान लेना १६७
२०. अलक्षणीयतावादी के मत का दूषण १६९

द्वितीय उद्योत

१. अविवक्षितवाच्यध्वनि के दो भेद १७४
अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि के उदाहरण १७५
अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य ध्वनि के उदाहरण १८०
२. विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के दो भेद १८३
३. रसादि का ध्वनित्व १८३
भावध्वनि का उदाहरण १८४
व्यभिचारी भावों के तीन धर्म (उदय, स्थिति, अपाय) और सन्धि तथा शबलता १८४
रसध्वनि का उदाहरण १८८
४. रसध्वनि का विषय १८९
रस के विषय में भट्टनायक के मत का उपपादन १९०
पूर्वोक्त मत का खण्डन १९३
रस के सम्बन्ध में विभिन्न मत १९६
५. रसाद्यलङ्कार का विषय २०१
शुद्ध रसाद्यलङ्कार का उदाहरण २०३
सङ्कीर्ण अङ्गभूत रसादि का उदाहरण २०६

पृष्ठ

ध्वनि, उपमादि अलङ्कार तथा रसवदाद्यलङ्कार का भेदोपसंहार २०१
चेतन वस्तुओं के वाच्यार्थीभाव की स्थिति रसाद्यलङ्कारत्व का खण्डन २११
६. गुण और अलङ्कार के लक्षण २१६
७. माधुर्य गुण का आधार २१७
८. शृङ्गार, विप्रलम्भ शृङ्गार तथा करुण में उत्तरोत्तर माधुर्य की आर्द्रता २१८
९. ओजस् के आधार (तथा उदाहरण) २२०
१०. प्रसाद गुण का स्वरूप २२४
११. श्रुतिदुष्टादि अनित्य दोषों के ध्वन्यात्मक शृङ्गार में हेयत्व का प्रतिपादन २२५
१२. विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के अङ्गों के आनन्त्य का प्रतिपादन २२७
शृङ्गार के स्वगतभेद २२८
१३. सचेतस् जनों के लिए दिङ्मात्र कथन २२९
१४. शृङ्गार के प्रभेदों में अनुप्रास के व्यञ्जनकत्वाभाव का उपपादन २३०
१५. विशेषतः विप्रलम्भ शृङ्गार में यमक आदि का प्रतिषेध २३०
१६. ध्वनि में रसाक्षिप्त रूप से बन्ध वाले अलङ्कार का उपपादन २३१
पूर्वोक्त विषयों का संग्रह २३४
१७. रूपकादि अलङ्कारों के शृङ्गारव्यञ्जकत्व का उपपादन २३५
१८-१९. रूपकादि अलङ्कारवर्ग के विनिवेशन में समीक्षा २३६
रस के अङ्गरूप से अलङ्कार की विवक्षा का उदाहरण २३७
रस के तात्पर्य में भी अलङ्कार के अङ्गी रूप से विवक्षित होने का उदाहरण २३८
अङ्ग रूप से विवक्षित होने पर भी अवसर में ग्रहण का उदाहरण २३९
गृहीत अलङ्कार के भी अवसर में त्याग का उदाहरण २४१
संसृष्टि के विषयापहार की स्थिति २४३
इसके निर्वाह के लिए अलङ्कार का पूरा निर्वाह नहीं २४६
निर्वाह के दृष्ट भी अलङ्कार का अङ्ग रूप से प्रत्यवेक्षण २४७
२०. विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के द्वितीय भेद का विभाग २५०
२१. शब्दशक्त्युद्भव अनुरणनरूप ध्वनि का स्वरूप २५१
श्लेष का उदाहरण २५१
श्लेष और शब्दशक्त्युद्भव ध्वनि का विषय-विभाग २५३
लोचन में चार विभिन्न मतों की चर्चा २६०
शब्दशक्तिमूलानुस्वानरूपव्यङ्ग्य ध्वनि में अन्य अलङ्कारों के उदाहरण २६४
२२. अर्थशक्त्युद्भव ध्वनि २६७
२३. कविद्वारा स्वोक्ति से आविष्कृत व्यङ्ग्य का तृतीय प्रकार २७१
२४. अर्थशक्त्युद्भव अनुरणनरूप व्यङ्ग्य का विभाग २७४
कविप्रौढोक्तिमात्रनिष्पन्न शरीर का उदाहरण २७५
कविनिबद्धवक्तृप्रौढोक्तिमात्रनिष्पन्न शरीर के उदाहरण २७६
२५. अर्थशक्त्युद्भव में अलङ्कार-ध्वनि २७८
२६. गम्यमान रूपक आदि अलङ्कारवर्ग का विस्तार २७९

पृ४

२७. अलङ्कारान्तर की प्रतीति में तत्परत्व न होने की स्थिति में ध्वनिव्यपदेशाभाव २८०
पूर्वोक्त विषय के अपवाद का निरूपण २८२
उपमा-ध्वनि २८६
आक्षेप-ध्वनि २८७
शब्दशक्तिमूलानुरणनव्यङ्ग्य अर्थान्तरन्यासध्वनि २८८
अर्थशक्तिमूलानुरणनव्यङ्ग्य अर्थान्तरन्यासध्वनि २८९
व्यतिरेक-ध्वनि के भी दो प्रकार २९०
उत्प्रेक्षा-ध्वनि २९१
श्लेषध्वनि २९४
यथासंख्य ध्वनि २९५
(लोचन में) दीपक, अप्रस्तुतप्रशंसा, अपह्नुति आदि ध्वनि २९६

२८. अलङ्कार-ध्वनि की प्रयोजनवत्ता का प्रतिपादन ३००
२९. वस्तुमात्र से अलङ्कार के व्यङ्ग्य होने पर ध्वन्यङ्गता ३०१
३०. अलङ्कारान्तर के व्यङ्ग्यत्व की स्थिति में ध्वन्यङ्गता ३०१
३१. प्रतीयमान अर्थ के अस्फुटत्व में ध्वन्यभाव
३२. विवक्षितवाच्य के आभास का विवेक ३०३
३३. अविवक्षितवाच्य के आभास का विवेक ३०७
३४. ध्वनि का उपसंहार ३०९

तृतीय उद्योत

१. ध्वनि के दोनों भेदों के पद-प्रकाश और वाक्यप्रकाश रूप ३१२
अविवक्षितवाच्य के अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य प्रभेद में पदप्रकाशता ३१३
अविवक्षितवाच्य के अर्थान्तरसंक्रमित वाच्य में पदप्रकाशता ३१४
अविवक्षितवाच्य के अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य प्रभेद में वाक्यप्रकाशता ३१७
अविवक्षितवाच्य के अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य में वाक्यप्रकाशता ३१९
विवक्षितवाच्य के अनुरणनरूप व्यङ्ग्य के शब्दशक्त्युद्भव में पदप्रकाशता ३२०
" " " वाक्यप्रकाशता ३२१
" " कविप्रौढोक्तिमात्रनिष्पन्न अर्थशक्त्युद्भव में पदप्रकाशता ३२१
" " " " वाक्यप्रकाशता ३२३
स्वतःसम्भविशरीर अर्थशक्त्युद्भव प्रभेद में पदप्रकाशता ३२३
" " वाक्यप्रकाशता ३२४
काव्यविशेष ध्वनि के पदप्रकाशत्वादि की अनुपपत्ति की शङ्का और परिहार ३२५
पूर्वोक्त विषयों का सङ्ग्रह द्वारा प्रतिपादन ३२६

२. वर्ण, पद आदि में अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य ध्वनि ३२७
३. वर्णों के रसद्योतकत्व का उपपादन ३२८
पद में अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य का द्योतन ३३०
पदावयव से द्योतन ३३०

पृष्ठ

वाक्यरूप अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य ध्वनि शुद्ध और अलङ्कारसंकीर्ण ३३३
४. सङ्घटना के स्वरूप का उपपादन ३३७
५. माधुर्यादि गुणों के आश्रय से सङ्घटना के रसाभिव्यञ्जकत्व का उपपादन ३३७
गुण और संघटना का भेद-विचार ३३७
६. सङ्घटना के नियम में हेतु वक्तृ-वाच्यगत औचित्य ३३८
सङ्घटना सामान्य में प्रसाद को आवश्यकता का उपपादन ३५१
७. सङ्घटना का नियामकान्तर विषयाश्रय औचित्य और उसके भेद ३५२
८. गद्यबन्ध में भी सङ्घटना का नियामक हेतु वक्तृवाच्यगत औचित्य ३५७
९. गद्यबन्ध में भी रसबन्धोक्त औचित्य के संश्रित संघटना ३५८
१०-१४. प्रबन्ध का रसादि के व्यञ्जकत्व में निबन्धन ३५९
अनौचित्य और औचित्य ३६२
कथाशरीर का रसमयत्व ३६६
१५. प्रबन्धों में अनुरणनरूप दूसरा प्रभेद भी भासित होता है ३७६
१६. सुप्तिङ्वचनकारकसमासादि से अलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य का द्योतन ३७९
'न्यक्कारो ह्ययमेव०' में सुबादि का व्यञ्जकत्व ३८०
सुबन्त का व्यञ्जकत्व ३८३
तिङन्त का व्यञ्जकत्व ३८४
सम्बन्ध का व्यञ्जकत्व ३८५
निपातों का व्यञ्जकत्व ३८५
उपसर्गों का व्यञ्जकत्व ३८६
पादपौनरुक्त्य का शोभावहत्व ३८८
काल का व्यञ्जकत्व ३८९
प्रत्यय तथा प्रकृत्यंश का व्यञ्जकत्व ३९०
१७. रसमयता के लिए विरोधियों के परिहार की आवश्यकता ३९५
१८-१९. रस के विरोधी तत्त्व ३९६
पूर्व विषयों का संग्रह द्वारा कथन (परिकर-श्लोक) ४०१
२०. बाध्य अथवा अङ्गभाव को प्राप्त विरोधियों के कथन की निर्दोषता ४०२
२१. एक रस का अङ्गीकार ४१५
२२. रसान्तरों के समावेश से प्रस्तुत रस की अङ्गिता उपहत नहीं ४१६
२३. पूर्वोक्त विषय के उपपादनार्थ कथन ४१७
२४. अन्य रस के अङ्गी होने पर अविरोधी-विरोधी रस का परिपोष नहीं चाहिए ४२०
२५. विरोधी के विभिन्नाश्रय होने पर परिपोष होने पर भी दोष नहीं ४२७
२६. विरोधी का रसान्तर के व्यवधान से प्रबन्ध में निवेशन ४२९
२७. बीच में दूसरे रस के होने पर दो रसों के विरोध का समाहार ४३५
२८. सभी रसों में, विशेषतः शृङ्गार में, विरोध-अविरोध निरूपणीय ४३६
२९. शृङ्गार रस में अतिशय अवधान की अपेक्षा ४३७
३०. शृङ्गार-विरुद्ध रस में उसके अङ्गों का स्पर्श दूषित नहीं ४३७

पृष्ठ

३१. रसादि के विरोध-अविरोध के ज्ञान का लाभ ४४०

३२. वाच्य और वाचक का औचित्य के साथ योजना महाकवि के लिए आवश्यक ४४१

३३. रसादि के तात्पर्य से संनिवेशित वृत्तियों का शोभावहत्व ४४३

रसादि का इतिवृत्तादि के साथ गुणगुणिव्यवहार की शङ्का और उसका समाधान ४४३

वाच्य और व्यङ्ग्य की एक काल में प्रतीति की शङ्का और समाधान ४४६

वाक्य का व्यञ्जकत्व स्वीकार न करने वाले मीमांसक के मत का आक्षेप तथा समाधान ४५४

व्यञ्जकत्व और गौणत्व में स्वरूपतः और विषयतः भेदोपादान ४६४

व्यङ्ग्य और व्यञ्जक का स्परूप-विवेक ४८०

३४. काव्य का दूसरा प्रकार गुणीभूत व्यङ्ग्य ४९२

त्रिविध गुणीभूतव्यङ्ग्य का निर्देश ४९३

३५. काव्यबन्धों में गुणीभूतव्यङ्ग्य के प्रकार की योजनीयता ४९६

३६. गुणीभूत व्यङ्ग्य के कारण अलङ्कारों की रम्यता का निर्देश ४९७

भामह का अतिशयोक्ति-लक्षण ४९९

३७. प्रतीयमानकृत छाया और स्त्रियों की लज्जा ५०६

३८. काकु से अर्थान्तर-प्रतीति के स्थल में गुणीभूतव्यङ्ग्यत्व ५०८

३९. गुणीभूतव्यङ्ग्य के विषय में ध्वनि की योजना नहीं करनी चाहिए ५११

४०. रसादितात्पर्य की पर्यालोचना से गुणीभूतव्यङ्ग्य का भी ध्वनिरूपत्व ५१४

वाच्य-व्यङ्ग्य के प्राधान्याप्राधान्य के विवेक के लिए प्रयत्न का निर्देश ५१७

'लावण्यद्रविणव्ययो०' में व्यामोह का निर्देश ५१८

अप्रस्तुतप्रशंसा के तीन प्रकार ५२१

४१. ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य के अतिरिक्त चित्र ५२५

४२. चित्र काव्य के दो भेद ५२५

'चित्र' शब्द का अर्थ-निरूपण ५२६

पूर्वोक्त विषयों का संग्रह ५२८

कवि का स्वातन्त्र्य ५३०

संग्रह द्वारा कथन ५३२

४३. सङ्कर और संसृष्टि से ध्वनि का अनन्तप्रकारत्व ५३३

ध्वनिप्रभेदसंकीर्णत्व का निरूपण ५३४

गुणीभूतव्यङ्ग्यसंकीर्णत्व का निरूपण ५३६

वाच्यालङ्कारसङ्कीर्णत्व का निरूपण ५४०

वाच्यालङ्कारसंसृष्टत्व ५४४

संसृष्टालङ्कारान्तरसंकीर्ण ध्वनि ५४७

संसृष्टालङ्कारसंसृष्ट ध्वनि ५४९

४४. ध्वनि के प्रभेद और प्रभेद-भेदों की अनन्तता ५५०

४५. सत्काव्य को करने के लिए या जानने के लिए ध्वनि प्रयत्नपूर्वक विवेचनीय ५५१

४६. रीतियों के प्रवर्तन का कारण ५५१

४७. शब्दतत्त्वाश्रय और अर्थतत्त्वाश्रय वृत्तियों का प्रकाशन ५५२

चतुर्थ उद्योत

पृष्ठ

१. ध्वनि के व्युत्पादन में प्रयोजनान्तर कवियों की प्रभिभा का आनन्त्य ५५७
२. ध्वनि के अन्यतम प्रकार से भी वाणी का नवत्व ५५८
अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य के आश्रयण से वाणी के नवत्व का उदाहरण ५५९
अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य के समाश्रयण से वाणी के नवत्व का उदाहरण ५६१
विवक्षितान्यपरवाच्य के उक्त प्रकारों के आश्रयण से वाणी के नवत्व के उदाहरण ५६२
३. इस युक्ति के आश्रयण से रसादि ध्वनि-मार्ग के बहुप्रकारत्व का उपपादन ५६४
४. रस के परिग्रह से दृष्टपूर्व अर्थों का नवत्व, मधुमास में वृक्षों की भांति ५६७
विवक्षितान्यपरवाच्य के शब्दशक्तिमूल-अर्थशक्तिमूल अनुरणनरूपव्यङ्ग्य के समाश्रयण से नवत्व के उदाहरण ५६७
अर्थशक्तिमूल अनुरणनरूप व्यङ्ग्य के कविनिबद्धवक्तृप्रौढोक्तिमात्रनिष्पन्नशरीर होने से नवत्व ५६९
५. विविध व्यङ्ग्यव्यञ्जकभाव के होने पर भी कवि को रसमय काव्य के निर्माण में सावधान होना चाहिए ५६९
अङ्गी रस की स्थिति में छायातिशय के प्रसंग में रामायण और महाभारत क्रमशः करुण और शान्तरस के मुख्यत्व का उपपादन ५७०
लोचन में गुणीभूतव्यङ्ग्य के विविध व्यङ्ग्य के प्रकारों के आश्रयण से नवत्व के उदाहरण ५८०
६. प्रतिभागुण के कारण काव्यार्थ के विराभ के अभाव का प्रतिपादन ५८०
७. देश, काल आदि अवस्थाभेद से शुद्ध वाच्य के भी आनन्त्य का प्रतिपादन ५८३
८. अवस्थादि से विभिन्न वाच्यों का निबन्धन लक्ष्य में अधिक, रसाश्रय से शोभित ५९३
९. औचित्यानुसारिणी देशकालादिभेदिनी रसादिसम्बद्ध वस्तुगति ५९३
१०. काव्यस्थिति का अक्षय्यत्व ५९३
११. संवादों की बहुलता ५९४
१२. कविवाणी के मिथःसंवाद में भी उनका भिन्नविषयकत्व ५९४
१३. संवाद के विभाग ५९५
१४. सदृश वस्तु के प्रतिपादन में भी काव्य का नवत्व ५९६
१५-१६. पूर्वोक्त वस्तु के प्रतिपादन में कवि को दोष नहीं ५९७-८
१७. कवि को भगवती सरस्वती का योग ५९९
१८. उपसंहार ६००

परिशिष्ट

१. ध्वनिकारिकार्धसूची ६०५
२. वृत्तिग्रन्थ-पद्यसूची ६०९
३. लोचन में उद्धृत उदाहरणपद्यों एवं वाक्यों की सूची ६१२
४. ध्वन्यालोक में उद्धृत ग्रन्थ और ग्रन्थकार ६१६
५. लोचन व्याख्यान में उद्धृत ग्रन्थ और ग्रन्थकार ६१६